प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की सदा स्तुति हो।
आज हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्ययन में आपका स्वागत करते हैं, और हम इसके पहले अध्याय से आरम्भ करते हैं। आइए पढ़ते हैं:

“1 यीशु मसीह का प्रकाशन, जो परमेश्वर ने उसे इसलिये दिया कि अपने दासों को वे बातें दिखाए जो शीघ्र होनेवाली हैं; और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर अपने दास यूहन्ना को संकेत द्वारा बताया।
2 जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, अर्थात जो कुछ
उसने देखा था, उसकी साक्षी दी।”
(प्रकाशितवाक्य 1:1–2)

सबसे पहले हम देखते हैं कि यूहन्ना लिखते हुए कहता है — “यीशु मसीह का प्रकाशन।” इसका अर्थ है कि जो उसने पाया वह उसका अपना प्रकाशन नहीं था, बल्कि स्वयं यीशु का था।

याद रखें, यूहन्ना वही प्रेरित था जो प्रभु के सबसे निकट था और जिसे प्रभु विशेष प्रेम करते थे। यहाँ तक कि प्रभु के गहरे रहस्य भी पहले उसी पर प्रकट होते थे। वही एकमात्र शिष्य था जो प्रभु की छाती से लगा रहता था
(यूहन्ना 13:23; 21:20)।

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

इसलिए जब प्रभु ने रोटी तोड़ते समय कहा कि “तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा,” तो पतरस ने यूहन्ना को संकेत किया कि वह प्रभु से पूछे कि वह कौन है। क्योंकि पतरस जानता था कि यूहन्ना प्रभु का प्रिय है।

प्रभु के साथ इस विशेष संबंध के कारण ही उसे यह अनुग्रह मिला कि वह प्रकाशितवाक्य प्राप्त करे — अर्थात वे बातें जो उसके समय में और अन्तिम दिनों में घटित होने वाली थीं।

यूहन्ना दानिय्येल के समान था, जिसे परमेश्वर अत्यन्त प्रिय मानता था, और इसलिए उसे भी भविष्यदर्शी दर्शन दिए गए। इससे हम सीखते हैं कि ऐसे महान प्रकाशन हर विश्वासी को नहीं मिलते, बल्कि उन्हें मिलते हैं जो परमेश्वर को भाते हैं। यदि हम भी प्रभु को प्रसन्न करें, तो वह हमें अपने गहरे रहस्य प्रकट करेगा।

धन्य कौन है?

पद 3 कहता है:

“धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और जो इसमें लिखी बातों को मानते हैं, क्योंकि समय निकट है।”

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

(प्रकाशितवाक्य 1:3)

यहाँ तीन बातें बताई गई हैं:

जो पढ़ता है
जो सुनता है (अर्थात आत्मिक समझ से सुनता है)
जो मानता और पालन करता है

सुनना केवल बाहरी कानों से सुनना नहीं, बल्कि आत्मिक प्रकाशन प्राप्त करना है। और मानना अर्थात उस वचन के अनुसार जीवन जीना।

हर व्यक्ति इस पुस्तक को समझने का अनुग्रह नहीं पाता, क्योंकि यह एक मुहरबंद पुस्तक है जिसे केवल पवित्र आत्मा ही खोलता है। इसलिए यदि आपको इसे समझने का अनुग्रह मिला है, तो उसमें लिखी बातों के अनुसार जीवन बिताइए — तब आप भी “धन्य” कहलाएँगे।

सात कलीसियाओं को अभिवादन

“4 यूहन्ना की ओर से एशिया की सात कलीसियाओं के नाम: अनुग्रह और शांति तुम्हें उससे मिले जो है, जो था और जो आनेवाला है…
5 और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी है, मरे हुओं में

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

से पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है…”
(प्रकाशितवाक्य 1:4–6)

यहाँ परमेश्वर की अनन्तता प्रकट होती है — जो था, जो है और जो आनेवाला है। केवल वही अनादि और अनन्त है।

“सात आत्माओं” का अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर के सात आत्मा हैं, बल्कि यह परमेश्वर के आत्मा की कार्यप्रणाली को दर्शाता है जो सातों कलीसियाओं में कार्य कर रहा था।

परमेश्वर अनन्तता से समय में आया ताकि मनुष्य का उद्धार करे। उसने एक देह तैयार की जिसमें वह वास करे — और वह देह यीशु थी।

“परमेश्वर मसीह में होकर संसार को अपने साथ मेल मिला रहा था।”
(2 कुरिन्थियों 5:18–19)

“परमेश्वर देह में प्रगट हुआ।”
(1 तीमुथियुस 3:16)

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

वह बादलों के साथ आएगा

“देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी…” (प्रकाशितवाक्य 1:7–8)

एक समय निर्धारित है जब प्रभु पुनः आएँगे और हर आँख उन्हें देखेगी। यह कलीसिया के उठा लिए जाने की घटना नहीं, बल्कि वह समय है जब प्रभु अपने पवित्र जनों के साथ पृथ्वी पर प्रकट होंगे।

मत्ती 24:29-30 — मनुष्य का पुत्र सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादलों पर आता दिखाई देगा।

पतमुस द्वीप पर यूहन्ना

“मैं यूहन्ना… परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था।”

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

(प्रकाशितवाक्य 1:9-11)

पतमुस एक निर्जन द्वीप था जहाँ कैदियों को मरने के लिए छोड़ दिया जाता था। वहाँ जीवन लगभग असम्भव था। लेकिन वहीं प्रभु ने यूहन्ना को महान रहस्य प्रकट किए।

यह हमें सिखाता है कि कभी-कभी कठिन परीक्षाएँ ही गहरे आत्मिक प्रकाशनों का मार्ग बनती हैं।

मनुष्य के पुत्र के समान एक

(प्रकाशितवाक्य 1:12-15)

यूहन्ना ने एक को देखा जो मनुष्य के पुत्र के समान था। यह कोई साधारण दृश्य नहीं बल्कि एक दर्शन था — प्रत्येक विवरण का आत्मिक अर्थ था।

सफेद बाल — न्यायी न्यायाधीश का प्रतीक
अग्नि समान आँखें — सब कुछ देखने वाला न्याय
पीतल जैसे पैर — दुष्टता को रौंदने का अधिकार

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

उसके मुख से दोधारी तलवार

(प्रकाशितवाक्य 1:16)

यह तलवार परमेश्वर का वचन है।

“क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल है, और हर एक दोधारी
तलवार से भी चोखा है…”
(इब्रानियों 4:12)

यह वचन कलीसिया के भीतर और बाहर दोनों का न्याय करता है।

यूहन्ना का भय और यीशु का परिचय

“मैं उसे देखकर उसके पाँवों पर मरे हुए के समान गिर पड़ा… उसने कहा, मत डर; मैं प्रथम और अंतिम हूँ।”

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

(प्रकाशितवाक्य 1:17-18)

यहाँ यीशु स्वयं को तीन प्रकार से प्रकट करते हैं:

1. मैं प्रथम और अंतिम हूँ
2. मैं जीवित हूँ — मैं मरा था पर अब सदा जीवित हूँ
3. मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे पास हैं

इन तीन बातों से यूहन्ना समझ गया कि वह स्वयं यीशु मसीह हैं।

सात तारे और सात दीपस्तंभ

(प्रकाशितवाक्य 1:19-20)

सात तारे = सात कलीसियाओं के दूत
सात दीपस्तंभ = सात कलीसियाएँ

प्रभु का स्थान अपनी कलीसिया के बीच में है — वहीं उसकी दृष्टि और आत्मा कार्य करती है।

प्रकाशितवाक्य: अध्याय 1

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

अध्याय 1 का महत्व

जिस प्रकार दानिय्येल की पुस्तक में नबूकदनेस्सर की मूर्ति भविष्य के राज्यों को समझने की नींव बनी, उसी प्रकार प्रकाशितवाक्य का पहला अध्याय पूरी पुस्तक को समझने की आधारशिला है।

यह अध्याय हमें यीशु मसीह के स्वरूप, अधिकार और कार्य को समझने की कुंजी देता है।

इसलिए आने वाले अध्यायों का अध्ययन अवश्य जारी रखें।

परमेश्वर आपको अत्यन्त आशीष दे।

Share on:
WhatsApp